CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7.5.82

श्रीविश्वनाथो जयति

श्रीभारतधर्ममहामण्डल

के

शास्त्रप्रकाशन-विभागद्वारा-प्रकाशित—

ग्रन्थों का सूचीपत्र

प्राप्तिस्थान

श्रीमहामण्डलभवन, लहुराबीर

वाराणसी-२२१००१

सम्वत् २०३५ सन् १९७८ ई०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपदेशकमहाविद्यालय

सनातनधर्मके पुनरभ्युदय, सद्विद्याविस्तार और आर्यजातिके अभ्युदयसाधनार्थ श्रीभारतधर्ममहामण्डलकी स्थापना हुई है। किन्तु जबतक कर्मयोगमें निरत साधु और गृहस्थ-धर्मसेवक और धर्मप्रचारक ऐसे नहीं उत्पन्न होंगे, जो दृढ़प्रतिज्ञ हो आजीवन धर्मव्रतधारण-पूर्वक सनातनधर्मके पुनरभ्युदयकेलिये यत्न करें, तबतक आर्यजातिकी पुनरुन्नति और सनातनधर्मका पुनरभ्युदय होना असम्भव है।

प्राचीन कालमें आश्रमगुरु संन्यासी और वर्णगुरु ब्राह्मण आजीवन धर्मव्रतधारण करते हुए लोकोपकारमें रत रहते थे। जबसे वह शैली हिन्दूसमाजमें शिथिल हो गयी है, तभीसे आर्यजातिकी अवनतिका प्रारम्भ हुआ है। आर्यसंतानको उसी त्रिलोकपावन धर्मव्रतकी शिक्षा देनेके अर्थ श्रीभारतधर्ममहामण्डलने सनातनधर्मके केन्द्रस्थल इस काशीधाममें उपदेशकमहाविद्यालय (Hindu Divinity College) स्थापित किया है, सर्वसाधारणकेलिये उसकी नियमावली प्रकाशित की गयी है। आशा है धर्मपरायण गृहस्थ और संन्यासी इस महा-यज्ञमें सम्मिलित होकर अपनी ऐहिक और पारलौकिक उन्नति करनेमें तत्पर होंगे।

आर्यमहिला (आदर्श मासिक पत्रिका)

आर्यमहिला मासिक पत्रिका हिन्दी संसारकी एक उच्चकोटिकी प्राचीन पत्रिका है। इसके प्रत्येक अंकमें नित्य पठनीय एवं जीवनके उच्च नैतिक आदर्शोंसे अनुप्राणित साहित्य प्रकाशित होता है। आप स्वयं पढ़ें और अपने परिचितों, मित्रों, महिलाओं एवं पुरुषोंको पढ़नेकेलिये प्रेरित करें।

वार्षिक मूल्य ५), एक प्रतिका ५० पै०

पत्रव्यवहारका पता—

व्यवस्थापक

श्रीआर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद्महामण्डल भवन

लहुराबीर, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीभारतधर्म महामण्डलके शास्त्र प्रकाशन विभागद्वारा प्रकाशित दार्शनिक तथा धार्मिक ग्रन्थ :—

कर्ममीमांसा दर्शन हिन्दी भाष्य

महर्षि भरद्वाजकृत नितान्त दुर्लभ ग्रन्थ कर्ममीमांसादर्शनको भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजने अपने समाधि योग से प्राप्त किया था। महर्षि जैमिनिकृत जो कर्ममीमांसा दर्शन उपलब्ध है, उसमें केवल यज्ञ-यागका वर्णन है, जिनका अनुष्ठान इस समय असम्भव प्राय हो गया है। इससे इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि, मानवके दैनिक जीवनसे सम्बन्धित कर्मरहस्य तथा कर्मविज्ञान सम्बन्धी प्रथम भाग कालक्रमसे लुप्त हो गया था, जिसको पूज्यपाद स्वामीजी महाराजने यौगिक अनुसन्धानद्वारा महर्षि भरद्वाजसे प्राप्त किया। महर्षि भरद्वाजकृत यह दर्शन चार पादोंमें विभक्त हैं, जिनके नाम धर्मपाद, संस्कारपाद, क्रियापाद और मोक्षपाद हैं। धर्मपादमें कर्मके साथ धर्मका सम्बन्ध, धर्मके अंगोपांग, पुरुषधर्म, नारीधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, आपद्धर्म, प्रायश्चित्त प्रकरणआदि धर्म सम्बन्धी अनेक विषयोंका वर्णन है। संस्कारपादमें संस्कार शुद्धिसे क्रियाशुद्धि कैसे होती है तथा संस्कारसे कर्मकी उत्पत्ति एवं कर्मसे संस्कारकी उत्पत्ति कैसे होती है, कर्मसे समस्त विश्व-ब्रह्माण्डका कैसा सम्बन्ध है इत्यादि विषयोंका विस्तृत विवेचन किया गया है। इसी प्रकार क्रियापादमें क्रियाकी प्रतिक्रिया कैसे होती है, जीवका परलोकमें गमन कैसे होता है, भावशुद्धिसे क्रियाशुद्धि कैसे होती है—आदि विषयोंका भलीभाँति विवेचन किया गया है। अन्तिम मोक्षपादमें मोक्षकी प्राप्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कैसे हो सकती है इसके विज्ञानका पूर्ण विवेचन किया है। मूल्य—धर्मपाद २); संस्कारपाद २ रु० २५ पैसा; क्रियापाद और मोक्षपाद ५)

कर्ममीमांसा दर्शन संस्कृत दर्शन संस्कृत भाष्य तथा सूत्रार्थ सहित—मूल्य—३)

दैवीमीमांसा दर्शन

दैवी मीमांसादर्शन भक्तिका दर्शन है। यह छठीं ज्ञानभूमिका दर्शन है। यह दर्शन शताब्दियोंसे लुप्त हो गया था। भक्तिके इस दर्शनके अभावसे भक्तिके आचार्यगण श्री रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य आदिने सप्तम ज्ञानभूमिके दर्शन वेदान्त दर्शनको ही अपने-अपने मतके अनुसार द्वैतमें खींचकर भक्तिका विषय प्रतिपादित किया है। महर्षि अंगिराके प्रसादसे भगवत्पूज्यपाद स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजने समाधियोगसे इसका आविष्कार किया तथा जनसाधारणके बुद्धिगम्य बनानेकेलिये इसपर विस्तृत भाष्यका भी प्रणयन किया। इस दर्शनके रसपाद, उत्पत्तिपाद, स्थितिपाद एवं लयपाद इन चारों पादोंमें ब्रह्म, ईश, विराट्, उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, जीवकी पारलौकिक गति, दैवी जगत्का स्वरूप, त्रिगुण और त्रिभावका स्वरूप अवतारतत्त्व महामायाके विद्या और अविद्या द्विविध रूप, मन्त्रकी महिमा, उपासनामें भक्तिका प्राधान्य, नारदादि ऋषियोंके मतानुसार भक्तिके विविध लक्षण ध्यान और समाधिके भेद, पराभक्तिकी अवस्थाओंका वर्णन आदि अनेक विषयोंका सरल विवेचन किया गया है। इस दर्शनके आविष्कारसे दार्शनिक जगत्का बड़ा भारी अभाव दूर हुआ है। मूल्य--रसपाद और उत्पत्तिपाद ३ रु० ५० पै०; स्थितिपाद और लयपाद ५);

पातञ्जल योग-दर्शन

महर्षि पतञ्जलिकृत योगदर्शन, सूत्र तथा हिन्दी-भाष्यसहित

भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजने इस अलौकिक दर्शनपर हिन्दी भाष्यमें प्राञ्जल भाष्य संस्कृत भाषामें उपलब्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है। इसपर विस्तृत भाष्य हिन्दी भाषामें प्रणयन करके पूज्यपाद ने योगमार्गके पथिक जिज्ञासु जनोंका अमित उपकार किया है। योग-दर्शन सर्ववादिसम्मत दर्शन है। इसमें साधनकेद्वारा अन्तर्जगत्के सब विषयोंका प्रत्यक्ष अनुभव करा देनेकी प्रणाली रहनेसे इसका अध्या-पन तथा भाष्य एवं टीका निर्माण वही व्यक्ति सुचारु रूपसे कर सकता है, जो योगके क्रिया सिद्धान्तका पारगामी हो। इसमें प्रत्येक सूत्रका भाष्य प्रारम्भमें भूमिका देकर ऐसा क्रमबद्ध बना दिया गया है, जिससे पाठकोंको इसके गहन विषयोंको समझनेमें बहुत ही सर-लता होती है।

मूल्य--३, पातञ्जल योगदर्शन सूत्र और संस्कृत भाष्य--मूल्य--५)

दर्शनादर्श संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सहित

जिसप्रकार मनुष्य स्वच्छ दर्पणमें अपना मुख भलीभाँति देख सकता है, उसीप्रकार इस ग्रन्थके पढ़नेसे दर्शनका विषय भलीभाँति समझमें आ जाता है। कोई भी दर्शन पढ़नेसे पहले इस ग्रन्थका अध्य-यन अत्यावश्यक है। मूल्य--१ रु० २५ पैसा

वेदान्त दर्शन चतुःसूत्री हिन्दी भाष्य

वेदान्त दर्शनके प्रथम चार सूत्रोंका विस्तृत हिन्दी भाष्य है। वेदान्त दर्शनके ये चार सूत्र ही इस दर्शनकी मूल भित्ति हैं। इनको समझ लेनेसे वेदान्त दर्शन बड़ी सरलतासे समझमें आ जाता है। मूल्य--१)

धार्मिक ग्रन्थ

सनातन धर्मका विश्वकोष --धर्मकल्पद्रुम

धर्मकल्पद्रुमका जैसा नाम है, वैसे ही इसके गुण हैं। वास्तवमें यह सनातन धर्मका कल्पवृक्ष ही है। सनातन धर्मका ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसका इस वृहद् ग्रन्थमें भलीभाँति निरूपण न किया गया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो। इस एक ही ग्रन्थके अध्ययनसे सनातन धर्मका सर्वांगपूर्ण व्यापक स्वरूप जिज्ञासुके समझमें आ जाता है। भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजके सुयोग्य शिष्य पूज्यपाद स्वामी दयानन्दजी महाराजने अपने परमाराध्य गुरुदेवके आदेशानुसार इस ग्रन्थका प्रणयन किया था। इस ग्रन्थसे आजकलके अशास्त्रीय और विज्ञानरहित धर्मग्रन्थों और धर्म प्रचारकेद्वारा जो हानि हो रही है, वह सब दूर होकर यथार्थ वैदिक सनातन धर्मका प्रचार होगा। इस ग्रन्थ-रत्नमें साम्प्रदायिक पक्षपात लेशमात्र भी नहीं है और निष्पक्ष रूपसे सब विषय प्रतिपादित किये गये हैं। इस ग्रन्थकी यह एक और भी विशेषता है कि, हिन्दूशास्त्रके सभी विज्ञान शास्त्रीय प्रमाणों और युक्तियों के अतिरिक्त आजकलकी पदार्थ विद्या (Science) केद्वारा भी प्रतिपादित किये गये हैं, जिससे आजकलके नवशिक्षित पुरुष भी उससे लाभ उठा सकें। यह ग्रन्थ आठ खण्डोंमें सम्पूर्ण हुआ है। प्रथम खण्ड का मूल्यः-६); द्वितीयका १०); तृतीयका रु० ३.५० पैसा; चतुर्थका ५); पंचमका ३.५० षष्ठका ४), सप्तमका १०) और अष्टम खण्ड का ४) है।

प्रवीणदृष्टिमें नवीन भारत।

श्रीस्वामी दयानन्द सम्पादित

इस ग्रन्थमें आर्यजातिके आदिका वासस्थान, उन्नतिका आदर्श निरूपण, शिक्षादर्श, आर्यजीवन, वर्णधर्मआदि विषय वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ वर्णित हैं। इसके दो खण्ड हैं, क्रमशः मूल्य २), २)।

नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत।

श्री स्वामी दयानन्द संपादित

भारतका प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्त्व जाननेकेलिये यह एक ही पुस्तक है। मूल्य ४)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधनचन्द्रिका।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

इसमें मन्त्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग इन चारों योगों का संक्षेपमें अतिसुन्दर वर्णन किया गया है। मूल्य १)७५ पै०।

शास्त्रचन्द्रिका।

वेद और वेदसम्मतदर्शन पुराणादि शास्त्रके आधारपर पारलौकिक विद्याके दिग्दर्शनार्थ यह ग्रन्थ इस विचारसे बनाया गया है कि, जिससे विद्यार्थियोंको धर्मशिक्षा प्राप्त करनेमें सहायता प्राप्त हो सके। मूल्य १-७५ पै०।

धर्मचन्द्रिका।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

बालकोंके पाठनोपयोगी उत्तम धर्मपुस्तक है। इसमें सनातनधर्मका उदार सार्वभौम स्वरूपवर्णन, यज्ञ, दान, तपआदि धर्माङ्गोंका विस्तृत वर्णन, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म, आर्यधर्म, राजधर्म तथा प्रजाधर्मके विषयमें बहुत कुछ लिखा गया है। धर्मविज्ञान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञआदि नित्य कर्मोंका वर्णन, षोड़शसंस्कारोंके पृथक्-पृथक् वर्णन और संस्कारशुद्धि तथा क्रियाशुद्धिद्वारा मोक्षका यथार्थ मार्गका निर्देश किया गया है। मूल्य १.२५

आर्य्यगौरव।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

आर्यजातिका महत्त्व जाननेकेलिये एक ही पुस्तक है। मू० ५० पै०

नीतिचन्द्रिका।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

मानवीय जीवनका उन्नत होना नीतिशिक्षापर ही अवलम्बित होता है। कोमलमति बालकोंके हृदयोंपर नीतितत्त्व संचित करनेके उद्देश्यसे यह पुस्तिका लिखी गयी है। इसमें नीतिकी सब बातें ऐसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरलतासे समझायी गयी हैं कि, इस एकके ही पाठसे नीतिशास्त्रका ज्ञान हो सकता है। मूल्य ०-७५ पैसा

चरित्रचन्द्रिका।

सम्पादक पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर

इस ग्रंथमें पौराणिक ऐतिहासिक और आधुनिक सुन्दर मनोहर विचित्र चरित्र वर्णित हैं। प्रथम भागका मूल्य १) और दूसरे भाग का १.५०

धर्मप्रश्नोत्तरी।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

सनातनधर्मके प्रायः सब सिद्धान्त अतिसंक्षिप्तरूपसे इस पुस्तिका में लिखे गये हैं। प्रश्नोत्तरीकी प्रणाली ऐसी सुन्दर रखी गयी है कि, छोटे बच्चे भी धर्मतत्त्वोंको भलीभाँति हृदयङ्गम कर सकेंगे। मूल्य केवल .२५ पै० मात्र है।

परलोक-रहस्य।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

मनुष्य मरकर कहाँ जाता है, उसकी क्या गति होती है, इस विषयपर वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ विस्तृत रूपसे वर्णन है। मूल्य .२५ पै०

चतुर्दशलोकरहस्य।

श्रीमान् स्वामी दयानन्द विरचित

स्वर्ग और नरक कहाँ और क्या वस्तु है, उनके साथ हमारे इस मृत्युलोकका क्या सम्बन्ध है इत्यादि विषय शास्त्र और युक्तिके साथ वर्णित है। मूल्य .२५ पै०

सती-चरित्र-चन्द्रिका।

श्रीमान् पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर सम्पादित।

इस पुस्तकमें सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी आदि ४४ सती स्त्रियोंके जीवन-चरित्र लिखे गये हैं। मूल्य २)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्य-कर्मचन्द्रिका।

इस ग्रंथमें प्रातःकालसे लेकर रात्रिपर्यन्त हिन्दूमात्रके अनुष्ठान करने योग्य कर्म वैदिक तान्त्रिक मन्त्रोंके साथ भलीभांति वर्णित हैं। मूल्य ०.५० पैसा

यह धर्मशिक्षा विषयक बड़ी उत्तम पुस्तक है। बालकोंको इससे धर्मका साधारण ज्ञान भलीभाँति हो जाता है। यह पुस्तक क्या बालक बालिका, क्या वृद्ध-स्त्री पुरुष, सबकेलिये बहुत ही उपकारी है। मूल्य .२५ पैसा।

धर्म-कर्म-दीपिका।

इस पुस्तकमें कर्मका स्वरूप, कर्मके भेद, संस्कारके लक्षण और भेद, वैदिक-संस्कारोंका रहस्य, त्रिविधकर्मका वैज्ञानिक स्वरूप, कर्म सम्बन्धसे मुक्ति, वर्णाश्रमधर्मकी महिमा, धर्म कर्म और विज्ञानका महत्त्व प्रतिपादन किया गया है, यह ग्रंथ मूल और सुस्पष्ट हिन्दी अनुवाद सहित शास्त्रीय प्रमाण देकर छापा गया है। मूल्य .५० पै०

सदाचारसोपान।

यह पुस्तक कोमलमति बालक-बालिकाओंकी धर्मशिक्षाकेलिये प्रथम पुस्तक है। मूल्य ०.१२ पैसा।

कन्याशिक्षासोपान

कोमलमति कन्याओंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ०-२५

ब्रह्मचर्यसोपान

ब्रह्मचर्यव्रतकी शिक्षा के लिये यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। मूल्य -२५ पै०।

साधनसोपान

यह पुस्तक उपासना और साधनशैलीकी शिक्षा प्राप्त करने में बहुत ही उपयोगी है बालक बालिकाओं को पहले से इन पुस्तको को पढ़ाना चाहिये। मूल्य २५ पै०।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्रसोपान

सनातनधर्मके शास्त्रोंका सारांश इस ग्रन्थमें वर्णित है। सब शास्त्रोंका कुछ विवरण समझनेकेलिये प्रत्येक सनातनधर्म्मावलम्बीके लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य २५ पै०।

कल्किपुराण

कल्किपुराणका नाम किसने नही सुना है ? इस कलियुगमें कल्कि महाराज अवतार धारणकर दुष्टोंका संहार करेंगे, उसका पूर्ण वृत्तान्त हिन्दी अनुवाद और विस्तृत भूमिकासहित यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। मूल्य १-५० पैसा

श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य

इस ग्रन्थमें सात अध्याय हैं। यथा-आर्य्यजातिकी दशाका परिवर्तन चिन्ताका कारण; व्याधिनिर्णय, औषधिप्रयोग, सुपथ्यसेवन, बीजरक्षा और महायज्ञसाधन। यह ग्रन्थरत्न हिन्दूजातिकी उन्नतिके विषयका असाधारण ग्रन्थ है इसका बंगला अनुवाद भी छप चुका है। मूल्य १-५० पैसा

धर्मविज्ञान

यह ग्रन्थ रत्न भी तीन खण्डोंमे प्रकाशित है और आधुनिक विज्ञान समन्वयके साथ-साथ इसमें धर्मके विविध अङ्गोंपर प्रकाश डाला गया है। समय समयपर लोगोंद्वारा की गयी एवं की जानेवाली शंकाओंका समाधान अत्यन्त सुन्दर और सुबोध भाषा में किया गया है। इसमें आधुनिक विज्ञानकेसाथ धर्मसम्बन्धी रहस्योंपर अच्छा प्रकाश डाला गया है। धर्मसम्बन्धी सभी बातोंको जाननेकेलिये यह पुस्तक बडी अनूठी है। मूल्य प्रथम खण्ड १०), द्वितीय खण्ड ४), तृतीय खण्ड ४)।

मन्त्रयोगसंहिता

भाषानुवादसहित। योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है इसमें मन्त्रयोगके १६ अङ्ग और क्रमशः उनके लक्षण, साधनप्रणालीआदि सब अच्छी तरहसे वर्णन किये गये हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हठयोगसंहिता

भाषानुवादसहित। योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें हठयोगके ७ अङ्ग और क्रमशः उनके लक्षण साधन प्रणालीआदि सब अच्छीतरहसे वर्णन किये गये हैं। गुरु और शिष्य दोनों ही इससे पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ४)

राजयोग-संहिता

यह संस्कृत हिन्दीमें प्रकाशित योग सम्बन्ध संहिता है। राजयोग-विषयक ऐसा ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ था। इसमें राजयोग के लक्षण, अङ्ग, कर्मभूमि, उपासनाभूमि ज्ञानभूमि, वैराग्य, धारण ध्यान समाधि प्रस्थानत्रय राजयोग-आवश्यकता, शमदम, तितिक्षा अज्ञानका स्वरूप तथा कर्मविज्ञानआदि विषयोंका सुन्दर ढंगसे विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। सभी योगोंका राजा होनेके कारण ही इसे राजयोग कहा गया है। इसका मूल्य १-५० है।

लययोग-संहिता

यह ग्रन्थ संस्कृतका हिन्दी भाषानुवादसहित एक नूतन प्रकाशन है। इस योगविषयक संहितामें विन्दु ध्यान, एवं सूक्ष्म क्रियाओंका बड़े ही सरलतासे मार्मिक वर्णन सरल हिन्दीमें किया गया है। आजतक योगविषयक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था। इसमें लययोगके सभी आवश्यक विषयों जैसे—यम, नियम, स्थूलक्रिया, सूक्ष्मक्रिया, स्वरसाधन, प्रत्याहार, धारण, षट्चक्रभेद, ब्रह्मरन्ध वर्णन, शिवशक्तियोग, ध्यान-लक्षण, लयक्रिया, साधनवैचित्र्य, अधिकारी निर्णय और समाधिआदि विषयोंके पूर्णरूपसे वर्णन किये गये है। मूल्य २) हैं।

तत्त्वबोध

भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित। यह मूल वेदान्तग्रन्थ श्री शंकराचार्य कृत है। मूल्य ०-५०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तोत्र कुसुमाञ्जलि

इसमें पंचदेवता, अवतार और ब्रह्मकी स्तुतियोंके साथ-साथ आजकलकी आवश्यकतानुसार धर्मस्तुति, गंगादि पवित्र तीर्थोंकी स्तुति, वेदान्तप्रतिपादक स्तुतियाँ और काशीके प्रधान देवता श्रीविश्वनाथकी स्तुतियाँ हैं। मूल्य २५ पै०

सप्त गीतायें

शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य एवं गणपतिकी पञ्चोपासनाके अनुसार पाँच प्रकारके उपासकोंकेलिये पाँच गीतायें—श्रीविष्णुगीता, श्रीसूर्यगीता, श्रीधीशगीता, श्रीशक्तिगीता और श्रीशंभुगीता एवं संन्यासियोंके लिए संन्यासगीता और साधकोंके लिए गुरुगीता भाषानुसार सहित छप चुकी है। इन सातों गीताओंमें अनेक दार्शनिक तत्त्व, अनेक उपासनाकाण्डके रहस्य और प्रत्येक उपास्य देवकी उपासनासे सम्बन्ध रखनेवाले विषय सुचारुरूपसे प्रतिपादित किये गये हैं। ये सातों गीतायें उपनिषद्रूप हैं। प्रत्येक उपासक अपने उपास्यदेवकी गीतासे तो लाभ उठावेगा ही, किन्तु अन्य चार गीताओं के पाठ करनेसे भी वह अनेक उपासनातत्त्वोंको तथा अनेक वैज्ञानिक रहस्योंको जान सकेगा और उसके अन्तःकरणमें प्रचलित साम्प्रदायिक ग्रन्थोंसे जैसा विरोध उदय होता है, वैसा नहीं होगा, वह परम शान्तिका अधिकारी होगा। संन्यासगीता में सब सम्प्रदायोंके साधु और संन्यासियोंके लिये सब जानने योग्य विषय सन्निविष्ट हैं। संन्यासिगण इसके पाठ करनेसे विशेष ज्ञान प्राप्तकर सकेंगे। गृहस्थोंकेलिए भी यह ग्रंथ धर्म ज्ञानका भण्डार है। विष्णुगीताका मूल्य २), सूर्यगीताका मूल्य १-५० पै०, शक्तिगीताका मूल्य २), धीशगीताका मूल्य १-५० पै०, शंभुगीताका मूल्य २), सन्यासगीताका मूल्य २) और गुरुगीताका मूल्य १)२५ पै० है। इनमेंसे पञ्चोपासनाकी पाँच गीताओंमें एक-एक तीनरंगा विष्णुदेव, सूर्यदेव, भगवती और गणपतिदेव तथा शिवजीका चित्रभी दिया गया है। शम्भुगीतामें वर्णाश्रमबंध नामक चित्र भी देखने योग्य है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरामगीता

श्रीमहर्षि वशिष्ठकृत तत्त्वसारायणमें कथित यह श्रीरामगीता है परमधार्मिक विद्वान् स्वर्गवासी भारतधर्मसुधाकर श्री महारावलजी साहब सर विजयसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० डूँगरपुरराज्याधिपतिके पुरुषार्थद्वारा इसका सुललित हिन्दी भाषामें अनुवाद हुआ है और विस्तृत वैज्ञानिक टिप्पणियोंकेद्वारा इसके दुरूह विषयोंका स्पष्टीकरण किया गया है, इन टिप्पणियोंके महत्त्वको सब दर्शनोंका ज्ञाता और सब योगोंका अभ्यासी समझकर आनन्दित हो सकता है—मूल्य केवल ३)।

कहावत रत्नाकार

न्यायावली और सुभाषितावली सहित। परमधार्मिक तथा विद्वान् स्वर्गीय श्रीमन् भारतधर्म-सुधाकर हिजहाइनेस महारावल सर विजयसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० डूँगरपुर नरेशके सम्पादकत्वमें इस पुस्तकका छपना प्रारम्भ हुआ था, जिसको श्रीमहामण्डलके शास्त्रप्रकाशविभागकी पण्डितमण्डलीने सुचारुरूपसे समाप्त किया। हिन्दीभाषाका यह एक अद्वितीय ग्रंथ है, इसमें हिन्दीभाषाकी प्रधानता रखकर पाँच भाषाओंमेंकहावतें दी गयी हैं, हिन्दी और उसकी संस्कृत कहावत, अंग्रेजी कहावत, फारसी कहावत और उर्दू अरबी कहावत। ये कहावतें प्रत्येक भाषाके प्रधान-प्रधान विद्वानोंद्वारा संग्रहीत ओर संशोधित हुई हैं, इसीप्रकार संस्कृत न्यायावली और अंग्रेजी अनुवाद और विस्तृत अंग्रेजी विवरण तथा हिन्दी अनुवाद और हिन्दी विवरण दिया है। अन्तमें संस्कृतसुभाषितवाली हिन्दी अनुवाद सहित दी गयी है। हिन्दी कहावत, संस्कृत न्यायावली और संस्कृत सुभाषितावलीको सर्वसाधारणके सुभीतेकेलिए अकारादि क्रमसे दिया गया है। इसके प्रारम्भमें अंग्रेजी और हिन्दीभाषाका महत्त्व प्रतिपादन करनेवाली एक भूमिका दी गई है। पुस्तक सर्वाङ्ग सुन्दर है सुन्दर जिल्द बँधी हुई है। रायल एडीशन १०), साधारण संस्करण ७)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीतार्थ चन्द्रिका

श्रीस्वामी दयानन्द विचरित

श्रीस्वामीजीकी विद्वत्ता किसीसे छिपी नहीं है। उन्होंने बहुत ही परिश्रम के साथ गीतापर यह अपूर्व टीका लिखी है। केवल हिन्दी भाषाके जानने वाले ही इसकेद्वारा गीताके गूढ़ रहस्यको जान सकें—इसी लक्ष्यसे यह टीका लिखी गयी है। इसमें श्लोक के प्रत्येक शब्दका हिन्दी अनुवाद, समस्त श्लोकका सरल अर्थ और अन्तमें एक अतिमधुर चन्द्रिकाद्वारा श्लोकका गूढ़ तात्पर्य बतलाया गया है। इसमें किसीका आश्रय न लेकर ज्ञान, कर्म और उपासना तीनोंका सामञ्जस्य किया गया है। भाषा अतिसरल तथा मधुर है। इस ग्रन्थके पाठ करनेसे गीताके विषयमें कुछ भी जाननेको बाकी नहीं रह जाता। हिन्दीभाषामें ऐसी अपूर्व गीता अबतक निकली ही नहीं है। मूल्य २-५० पै० सजिल्द ३)

सनातनधर्म-दीपिका

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित

इसमें धर्म, नित्यकर्म, उपासना, अवतार, श्राद्ध-तर्पण, यज्ञोपवीत-संस्कार, वेद और पुराण, वर्णधर्म, नारीधर्म, शिक्षादर्श और उपसंहार शीर्षक निबन्ध लिखकर श्रीस्वामीजीने बड़ी ही सरलभाषामें सनातनधर्मके मौलिक सिद्धान्त समझा दिये हैं। मूल्य केवल १)।

त्रिवेदीय संध्या

शास्त्रविशारद महोपदेशक

पं० राधिकाप्रसाद वेदान्तशास्त्री प्रणीत

इसमें तीनों वेदोंकी सन्ध्या दी गई है। हरएक मन्त्रका हिन्दीमें अन्वय और विशुद्ध सरल हिन्दीभाषामें अनुवाद किया गया है। सन्ध्या क्यों की जाती है? सन्ध्याका स्वरूप क्या है? उपसनाकी रीति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सन्ध्याकेद्वारा अपने-अपने जीवनको कैसे उन्नत कर सकते हैं, सन्ध्या किस समय की जाती है और कैसे की जाती है, सन्ध्या न करनेसे क्या हानि होती है, सन्ध्याका वैज्ञानिक तात्पर्य क्या है, आदि संध्या सम्बन्धी सब बातें युक्ति और शास्त्रीय प्रमाणोंसे सिद्ध की गयी है। मूल्य केवल ३७ पैसा।

"THE WORLD'S ETERNAL RELIGION"

A Unique work on Hinduism in one volume, containing 24 Chapters with tricolour illustrations, glossary etc. No work has hitherto appeared in English that gives in a suggestive manner the real exposition of the Hindu religion in all its phases. The book has perfectly supplied this long-felt want. Names of the ehapters are as follows :—1 Foreword, 2 Universal Religion, 3 Classification, 4 Law of Karma, 5 Worship in all its phases, 7 Practice of Yoga through Mantras, 7 Practice of Yoga uhrough physical exercise, 8 Practiee of Yoga through inner force of Nature. 9 Yoga through power of reasoning, 10 The Mpstic Circle, 11 Love and Devotion, 12 Plans of knowledge, 13 Time, space creation, 14 the Occult world. 15 Evolution and Reincarnation, 16 Hindu philosophy, 32 The System of Castes and Stages of Life, 1–Woman's Dharma. 19 Image Worship, 20 The great Saerifices, 21 Hindu Scriptures, 22 Liberation, 23 Education, 24 Reconcilidaton of ali Religions- The followers of all religions in the world will profit by the light the work is intended to give, price cloth bound, superior edition Rs. 6, Ordinay edition Rs. 4 Postage extra.

ब्रह्मविद्याका मूलग्रन्थ

सरल हिन्दीमें वेदान्तका यह ग्रंथ है। थियोसाफीकी दृष्टिसे ब्रह्मविद्याका रहस्य इस पुस्तकमें लिखा गया है। २५० पृष्ठकी पुस्तकका दाम ७५ पैसा मात्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोव्रत-तीर्थ-महिमा

इस पुस्तकमें गो-महिमा व्रतोत्सवमहिमा और तीर्थमहिमा, शास्त्रीय प्रमाण तथा वैज्ञानिक युक्तिके साथ विस्तृतरूपसे वर्णित है। धर्मल्पद्रुमके अष्टमखण्डके प्रथम तीन अध्यायका ही 'गोव्रत तीर्थ-महिमा' देकर पृथक् पुस्तकरूपसे प्रकाशित किया गया है। जो धर्म-कल्पद्रुम जैसा विराट् धर्मग्रंथ नहीं खरीद सकते, वे इस छोटी-सी पुस्तकसे सनातनधर्मके सबसे श्रेष्ठ गो-महिमा, व्रतोत्सवमहिमा और तीर्थमहिमाका रहस्य जान सकते हैं। मूल्य .५० पै०।

मार्कण्डेयपुराण

महर्षि वेदव्यासका संसार प्रसिद्ध यह ग्रंथ है। भाषा बड़ी सरल और हिन्दीटीका सहित तीन खण्डोंमें प्रकाशित है। मूल्य तीनोंका क्रमशः १.५० प्रतिखण्ड है।

भारतवर्षका इतिवृत्त

[लेखक—पं० गोविन्दशास्त्री दुग्वेकर]

इस ग्रन्थको हिन्दी जगत्के नामाङ्कित लेखक पं० गोविन्दशास्त्री दुग्वेकरने श्री भारतधर्म महामण्डलके संस्थापक भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजकी आज्ञाके अनुसार उन्हींके शब्दों में लेखबद्ध किया है। ग्रन्थके बारह अध्याय हैं। यथा—(१) ब्रह्माण्ड और भारतद्वीप, (२) ब्रह्माण्ड का मानचित्र, (३) जगद्गुरु भारतद्वीप, (४) सृष्टि प्रकरण और कालचक्र, (५) मनुष्य सृष्टिका आदिस्थान और वर्णाश्रम बन्ध, (६) भारतद्वीपका सामाजिक संघटन, (७) वेद और शास्त्रका अनादित्व, (८) भारतद्वीपका धर्म और उसकी ज्ञानगरिमा, (९) राजानुशासन विज्ञान, (१०) प्राचीन भारतद्वीपकी शिक्षा प्रणाली (११) रामायण, (१२) महाभारत।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस ग्रन्थके इन अध्यायोंके नामसे इसके महत्वपूर्ण विषयोंपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ता है। इसके अध्ययनसे प्राचीन भारतके आदर्श राज-शासन प्रणाली, सामाजिक संघटन, शिक्षा प्रणाली, भारतका जगद्गुरुत्व किन कारणोंसे है, आदि अनेक विषयोंपर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। इसे प्रत्येक गृहस्थको अपने घरमें अवश्य रखना चाहिये तथा अध्ययन करना चाहिये। मूल्य—३

भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजका जीवनवृत्त

यह ग्रन्थ श्रीभारतधर्म महामण्डलके संस्थापक तथा संचालक भगवत्पूज्यपाद महर्षि स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराजका जीवन चरित है। इसमें उनके प्रारम्भसे लेकर महानिर्वाण तकके अलौकिक तथा अतिमानुषिक लोक हितकर कार्योंका वर्णन है। शास्त्रोंमें कहा है, "महाजनो येन गतः सः पन्था" अर्थात् महापुरुष जिस मार्गसे गये हैं, वही मनुष्योंके चलने योग्य मार्ग है। महापुरुषोंके जीवन-चरित्रके अध्ययन अध्यापन तथा अनुशीलनसे इसी मार्गका परिचय प्राप्त होता है। इस ग्रन्थको अवश्य प्रत्येक व्यक्तिको संग्रह करना चाहिये। पृष्ठ संख्या ६३९ मूल्य—४।

श्री आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् द्वारा प्रकाशित अनमोल पुस्तकें

पुस्तक नाम	रु० पै०		
भारत धर्म समन्वय	२-५०		
परलोक तत्त्व	२-५०	सदाचार प्रश्नोत्तरी	०-८०
कठोपनिषद्	३-००	व्रतोत्सव कौमुदी	१-७५
धर्मतत्त्व	२-५०	हिन्दू संस्कृति समीक्षा	०-५०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदान्त दर्शन	१-००	धर्म प्रवेशिका	१-२५
भाभीके पत्र	१-५०	पूजा-प्रार्थना	०-७५
कुमारिल भट्ट	१-५०	गायत्री मन्त्र टीका	०-२५
(नाटक)		आचार चन्द्रिका	१-००
हिन्दूधर्मका स्वरूप	०-३७	कन्या शिक्षा सोपान	०-२५
तत्वबोध (सजिल्द)	१-००	गजेन्द्र मोक्ष	०-३७
आदर्शदेवियाँ (प्रथमभाग)	२-२५	महिला प्रश्नत्तरी	०-५०
,, ,, (द्वितीय भाग)	३-००	व्रतोत्सव चन्द्रिका	५-००
सती सदाचार	१-५०	धर्माधर्म प्रश्नोत्तरी	०-५०
कर्म रहस्य	२-२५	सुलोचना	०-६२
केनोपनिषद्	१-५०	तीर्थ और देवपूजन	
ईशावास्योपनिषद्	१-००	प्रश्नोत्तरी	०-२५
सप्तशती(दुर्गा)गीता कपड़ेकी	३-००	स्मरणी	०-६२
दफ्तीकी जिल्द	२-२५	स्त्री-पुरुष विज्ञान	०-३७
श्राद्ध और परलोक विचार	०-३७	परलोक प्रश्नोत्तरी	०-२५
श्रीमद्भागवत एकादश		श्रीमद्भगवदीता	४-००
स्कन्ध	३-५०	(अप्रतिम भाषानुवाद	
सतीधर्म और योगशक्ति	०-३७	सहित)(प्रथम भाग)	
अन्तःकरण विज्ञान	०-७५	,, ,, द्वितीय भाग	०-३७
निर्मूल आक्षेपोंका उत्तर	०-३७	मनुष्य धर्म	०-३७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमद्भागवतका एकादश स्कन्ध

(मूल्य और सरल हिन्दी अनुवादसहित)

सम्पूर्ण भागवतका सारभूत यही एकादश स्कन्ध ज्ञान और भक्तिसे ओतप्रोत है। सांख्ययोग, कर्मयोग, भक्तियोगआदि सभी गूढ़ विषयोंका सुन्दर सरल और सरस विवेचन इस एक स्कन्धमें सन्निहित है। कागजकी कमीकेकारण थोड़ी-सी प्रतियाँ छपी हैं। अतः शीघ्र आर्डर भेजकर अपनी प्रति मँगा लें। यह दुर्लभ प्रकाशन प्रत्येक हिन्दूकेलिये संग्रहणीय है। मूल्य ३) ५० पै० मात्र

श्रीसप्तशती गीता (दुर्गा)

हिन्दी-संसारमें बहुत दिनोंसे जिस सुदुर्लभ ग्रन्थका अभाव था, उसी दुर्गासप्तशतीका संस्करण सानुवाद प्रकाशित हो गया है। दुर्गासप्तशतीकी इसप्रकारकी टीका आपको आजतक किसी भी भाषामें देखनेको न मिली होगी। यह संस्करण नया संशोधित और परिवर्धित है।

अन्वयके साथ-साथ भाषामें अनुवाद तथा हिन्दीभाषामें इसकी इतनी सुन्दर टीका की गयी है कि, पाठ करनेमें माँ दुर्गाके आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक रहस्यको सबलोग अनायास ही भलीभाँति समझ लेते हैं। किसीप्रकारकी भी आशंका क्यों न हो, इस ग्रन्थके पाठ करनेसे समूल नष्ट हो सकती है। दुर्गापाठ करनेवाले प्रत्येक विद्वान्, पण्डित तथा हिन्दू-गृहस्थको यह ग्रन्थरत्न खरीदकर लाभ उठाना चाहिये। पाठकोंके सुभीते और प्रचारकेलिये केवल लागतमात्र मूल्य रखा गया है। कपड़े की जिल्दवाली रु० ३-०० कागजकी १ रु० २५ पै०

पता—मैनेजर, वाणी-पुस्तकमाला लहुराबीर, वाराणसी कैंट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अखिल भारतीय धार्मिकाध्यात्मिक संस्कृत-विद्यापीठ

यह विद्यापीठ श्रीभारतधर्ममहामण्डलद्वारा स्थापित एवं संचालित है। इसमें वेद, वेदाङ्ग, व्याकरण, न्याय, साहित्य, मीमांसा, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद और राष्ट्रभाषा हिन्दीआदि विविध विषयोंकी परीक्षायें प्रथमासे लेकर आचार्यतक प्रतिवर्ष नियमित हुआ करती हैं। इसके परीक्षाकेन्द्र भारतके प्रत्येक प्रान्त तथा नगरोंमें स्थापित हैं। जहाँ कहीं संस्कृतपाठशाला, पुस्तकालयआदि हों, और जो सज्जन इसके केन्द्र अपने यहाँ स्थापित करना चाहें, वे पत्रद्वारा केन्द्रस्थानकी अनुमति प्राप्त कर सकते हैं। शेष ज्ञातव्य विषय परीक्षा-नियमावली मँगा कर देखें।

निदेशक

परीक्षामन्त्री, संस्कृतविद्यापीठ

महामण्डलभवन, लहुराबीर, वाराणसी–२२१००१

सूर्योदय

सनातनधर्म और हिन्दूसंस्कृतिकी प्रचारक यह अद्वितीय संस्कृत मासिक पत्रिका श्रीभारतधर्ममहामण्डलद्वारा गत ५५ वर्षोंसे प्रकाशित हो रही है। इसका वार्षिक मूल्य ९) तथा एक प्रतिका १) है। समस्त-विद्यानुरागी, विद्यार्थी तथा संस्कृतभाषाप्रेमी सज्जोंको ग्राहक बनकर संस्कृत-भाषाके प्रचारमें सहायक होना चाहिये। पत्रव्यवहार निम्न पतेसे करें।

व्यवस्थापक "सूर्योदय"

महामण्डलभवन, लहुराबीर, वाराणसी–२२१००१

मुद्रक–जय भारत प्रेस, बाँसफाटक, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh